Roll No. : .....

Total No. of Questions : **12**] [Total No. of Printed Pages : **4**

A–324

B.A. (Part–III) Examination, 2023

HINDI LITERATURE

Paper - I

(आधुनिक काव्य)

*Time : **3** Hours*] [*Maximum Marks : **100***

खण्ड–अ **(अंक : 2 × 10 = 20)**

नोट :– सभी **दस** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **50** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **2** अंक का है।

खण्ड–ब **(अंक : 8 × 5 = 40)**

नोट :– सात में से किन्हीं **पाँच** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **200** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **8** अंक का है।

खण्ड–स **(अंक : 20 × 2 = 40)**

नोट :– चार में से किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **500** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **20** अंक का है।

खण्ड–अ

1. सभी **दस** प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

   (i) 'रश्मिरथी' में कवि का संदेश क्या है ?

   (ii) 'रश्मिरथी' नामकरण से क्या अभिप्राय है ?

(iii) 'दुनिया वणिक वृत्ति है रखती' में कवि किस सांसारिक वृत्ति की ओर संकेत कर रहा है ?

(iv) 'नौका विहार' कविता के माध्यम से कौनसा आध्यात्मिक संकेत किया गया है ?

(v) 'टूटा पहिया' कविता में 'टूटा पहिया' किसका प्रतीक है ?

(vi) 'धरती उस किसान की' कविता के रचयिता कौन हैं ?

(vii) 'मोचीराम' कविता का क्या प्रतिपाद्य है ?

(viii) 'साये में धूप' में कवि क्या कहना चाहता है ?

(ix) 'विमर्श' शब्द की व्याख्या कीजिए।

(x) 'साहित्य' शब्द को परिभाषित कीजिए।

खण्ड–ब

नोट :– निम्नलिखित अवतरणों की सात में से किन्हीं **पाँच** की सप्रसंग व्याख्या कीजिए–

2. कंकरियाँ जिनकी सेज सुघर
छाया देता केवल अम्बर,
विपदाएँ दूध पिलाती हैं
लोरी आँधियाँ सुनाती हैं।
जो लाक्षा–गृह में जलते हैं,
वे ही शूरमा निकलते हैं॥

3. वह करतब है यह कि शूर जो चाहे कर सकता है,
नियति भाल पर पुरुष पाँव निज बल से धर सकता है।
वह करतब है यह कि शक्ति बसती न वंश या कुल में,
बसती है वह सदा वीर पुरुषों के वक्ष पृथुल में॥

4. बचकर हाय! पतंग मरे क्या ?
प्रणय छोड़कर प्राण धरे क्या ?
जले नहीं तो मरा करे क्या ?
क्या यह असफलता है ?
दोनों ओर प्रेम पलता है॥

5. ज्यों-ज्यों लगती है नाव पार

उर में आलोकित शत विचार!

इस धारा-सा ही जग का क्रम, शाश्वत इस जीवन का उद्‌गम,

शाश्वत है गति, शाश्वत संगम।

शाश्वत नभ का नीला विकास, शाश्वत शशि का यह रजत हास,

शाश्वत लघु-लहरों का विलास॥

6. मैं क्या जला ?

मुझको अग्नि ने छला-

मैं कब पूरा गला, मुझको

थोड़ी-सी आँच दिखा दुर्बल मोमबत्ती-सा मोड़ दिया

देखो मुझे

हाय मैं हूँ वह सूर्य

जिसे भरी दोपहरी में

अँधियारे ने तोड़ दिया॥

7. यश है न वैभव है, मान है न सरमाया

जितना ही दौड़ा तू उतना ही भरमाया

प्रभुता का शरण बिम्ब केवल मृगतृष्णा है

हर चंद्रिका में छिपी एक रात कृष्णा है॥

8. कुछ हैं जो अक्षरों के आगे अंधे हैं

वे हर अन्याय को चुपचाप सहते हैं

और पेट की आग से डरते हैं

जबकि मैं जानता हूँ कि 'इन्कार से भरी हुई एक चीख'

और 'एक समझदार चुप'

दोनों का मतलब एक है।

खण्ड–स

नोट :– चार में से किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

9. 'रश्मिरथी' के केन्द्रीय पात्र कर्ण की चारित्रिक विशेषताओं का उद्घाटन कीजिए।

10. 'नौका विहार' कविता की विशेषताओं को बताते हुए पंत के प्रकृति प्रेम को स्पष्ट कीजिए।

11. दिनकर के काव्य में राष्ट्रीय भावना को 'राष्ट्र देवता का विसर्जन' कविता के माध्यम से समझाइए।

12. स्त्री-विमर्श पर एक निबंध लिखिए।